सामाजिक संस्था संपूर्णा
(गैर सरकारी संगठन)
संपूर्ण विकास की ओर अग्रसर

आलेख

'मातृ दिवस पर भावांजलि'

संकट के इस काल में मातृ दिवस के इस पावन अवसर पर आप जहां पर भी हैंए अपनी मां का स्मरण कर प्रणाम अवश्य करें

–डॉ शोभा विजेंद्र
संपूर्णा संस्थापिका

बहुत सालों से भारत में भी हैप्पी मदर्स डे मनाना प्रारंभ हो गया है। गत वर्षों से मैं भी अनुभव कर रही थी कि भारतवासी लोग 365 दिन ही मां को प्रणाम करते हैं तो इस विशेष दिवस की आवश्यकता क्यों पड़ी किंतु इस लॉक डाउन के समय में जब हम सब लोग अपने. अपने घरों में कैद हैं और प्रकृति की इस विपत्ति का सामना घर में बैठकर कर रहे हैं सच में इस मातृ दिवस ने बहुत रोमांचित कर दिया है।

हर व्यक्ति के जीवन में मां का अपना विशेष स्थान है। यह वह आधार है जिसके बिना किसी भी व्यक्ति का व्यक्तित्व गढ़ा ही नहीं जा सकता। ऐसे में मैं भी आज के दिन को अपनी मां को ही समर्पित करना चाहती हूं।

जबसे मैंने होश संभाला तब से ही मेरा हाथ थामे रखा वह और कोई नहीं मेरी मां है। कठिन परिश्रम साहस दृढ़ निश्चय और कम साधनों में अच्छे से अच्छी परवरिश देकर जिस महिला ने मुझे यहां तक पहुंचाया और कोई नहीं केवल और केवल मेरी मां ही है।

मुझे अच्छी तरह से याद है कि दिल्ली के इंद्रप्रस्थ स्कूल जामा मस्जिद में मैं पढ़ती थी। मैं सफेद रंग की स्कर्ट और उस पर हरे रंग की कोटी पहनकर स्कूल के लिए जाती थी। मेरी यूनिफॉर्म को देखकर सभी सहेलियां बड़ी अचंभित होती थी क्योंकि सबसे साफ़ और इस्त्री करी हुई करीने से पहनी हुई वह यूनिफार्म मेरी मां मेरे लिए तैयार करती थी। मेरी बेफिक्री का आलम यह था कि जब मैं कॉलेज भी जाने लगी उसके बाद भी मुझे किसी उत्सव इत्यादि में जाना होता था मुझे क्या पहनकर जाना है वह मेरी मां पहले से ही लगा कर रखा करती थी।

विवाह से पूर्व किसी भी प्रकार की चिंता को मेरे पास फटकने तक नहीं दिया। मुझे आज भी इतना याद है कि मेरी 12वीं कक्षा की परीक्षा थी। हमारे घर में उस दिन दूध समाप्त हो गया था। मेरे पापा रात को 11 बजे मंदिर से घर वापस आए। वह रोज सायंकाल हौजकाजी पर स्थित चौमुखा महादेव मंदिर दर्शन को अवश्य जाते थे। मेरे पिताजी ने मेरी मां से कहा कि आज दूध खत्म हो गया और कल बेटी की परीक्षा है। मेरे पापा सारे दूध वालों के चक्कर लगाकर जाने कहां से शायद चांदनी चौक से किसी हलवाई से दूध लेकर आए। मेरी मां को ऐसा लगता था कि बेटी दिन.रात पढ़ाई कर रही हैए उसको रात को दूध तो मिलना ही चाहिए।

आज भी ऐसी अनेकों संस्मरण मन को प्रेम से भर देते हैं। सच कहूं कि आज का यह विशेष दिन कम से कम उन पुरानी बातों को याद करने वाला बनता है।

मैं अपने सभी भाई.बहनों से विनती करती हूं कि वह आज के दिन मन ही मन जहां पर भी बैठे हैंए अपनी मां का स्मरण अवश्य करें और मन से प्रणाम करें। मै दावे से कह सकती हूं कि आपको अनेकानेक शुभाशीष की अनुभूति अवश्य होगी।

सबके मंगल की कामना करते हुए आप सबको मातृ दिवस की ढेर सारी शुभकामनाएं।

.....